मिव या रिमता वनमालिना ॥ ३१॥ विकसितसर्सिजलितमुखेन। म्फ्राति न सा मनासिजविशिखेन। मिव या रामिता वनमालिना ॥ ३२॥ म्रमृतमधुरमृ इतर्वचनेन । ज्वलात न सा मलयजपवनेन। मिल या रिमता वनमालिना ॥ ३३॥ म्यलाजलम् स्माचिकर्चरणान । लुठित न सा किमकर्करणेन। मिव या रिमता वनमालिना ॥ ३४ ॥ मजलाजलाद्ममुद्यमृचिर्ण। दलति न सा कृदि विर्क्भरेण। माखि या रामिता वनमालिना ॥ ३५॥ कनकानिकषरुचिश्रचिवसनेन। श्वािमाति न सा परिजनक्सनेन। मािव या रामिता वनमािलना ॥ ३६॥ सकलभुवनजनवर्तरूणेन । वक्ति न सा रुजमितकरूणेन। साखि या रिमता वनमालिना ॥ ३०॥ श्रीजयद्वभाणितवचनेन । प्रविशतु क्रिरोपि कृद्यमनेन।